वर्षम्-०३ अङ्कः-०३ शोधज्योतिः
जनवरी-दिसम्बर, २०२१ ISSN-2350-0700

वैदिक वाङ्मय में सविता और सूर्य : तुलनात्मक समीक्षा

डॉ. हेरम्ब पाण्डेय[१]

वैदिक आर्यों के जीवन में धर्म का विशेष महत्त्व था। उनका देवताओं की सत्ता, प्रभाव तथा सर्वव्यापकता पर दृढ़ विश्वास था। आर्यों की प्राचीन धारणा देवताओं के सन्दर्भ में बहुत व्यापक थी। कारण यह है कि उनके सम्मुख प्रकृति की विचित्र लीलाएँ नित्य-प्रतिदिन के अनुभव का विषय थीं। इस मनोहर धरा पर जन्म लेते ही मानव अपने को कौतुकावह प्राकृतिक दृश्यों द्वारा चारों ओर से घिरा पाता है, जो मानव मन-मस्तिष्क पर अपना विशेष प्रभाव छोड़ते हैं। वैदिक आर्यों ने इन प्राकृतिक पदार्थों को भलीप्रकार समझने के लिए इनमें भिन्न-भिन्न देवताओं की कल्पना की। उन्होंने सृष्टि के तीन लोकों- पृथिवी, अन्तरिक्ष और आकाश में अनेक देवताओं की सत्ता मानी। वैदिक मन्त्रानुशीलन से भी बहुदेववादी धार्मिक आस्था के स्पष्ट प्रमाण प्राप्त होते हैं, जिसे विद्वान् बहुदेववाद (पालीथीज़्म) की संज्ञा देते हैं।

अन्य लोकों की भाँति ही द्युलोक में अनेक देवताओं की पृथक् सत्ता का प्रमाण अनेक मन्त्रों में प्राप्त होता है। द्युस्थानीय देवों में सविता और सूर्य विशेष महत्त्वपूर्ण हैं- इस तथ्य की पुष्टि उनके निमित्त प्रयुक्त मन्त्रगत भावों पर विचार करने से होती है। कहा गया है- '**प्रत्यक्षदेवो दिवाकरः**'। सूर्य या सविता नित्य दृष्टिगत होने वाले देव हैं। अतः उनका आर्यों के धार्मिक चिन्तन का केन्द्रबिन्दु होना कोई आश्चर्य का विषय नहीं है। वेदों में तो दोनों देवताओं के मध्य इतनी अधिक समानता है कि कहीं-कहीं तो दोनों देवताओं में विभेद करना ही कठिन हो गया है, परन्तु सविता और सूर्य अतिसूक्ष्म विवेचन के आधार पर पृथक्-पृथक् ही माने गये हैं। यही प्रायः सभी वैदिक विद्वानों की मान्यता है।

---

[१] सहायक आचार्य-संस्कृत, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अदलहाट, मीरजापुर, उ0प्र0
पता- एन 1/30, ए-9 नगवा, लंका, वाराणसी-221005, ई-मेल- herambapandey007@gmail.com, मो.नं. 9451895141, 812744710

सर्वप्रथम सविता और सूर्य की साम्यता पर विचार किया जा रहा है, जहाँ सविता को सूर्य के सदृश तथा सूर्य को सविता के सदृश कार्यों का निष्पादन करते हुए वर्णित किया गया है। जैसे सुवर्ण पाणि सविता दोनों लोकों में गमन करता है, रोगादि का निवारण करता है, उदित होता है तथा तमोनाशक तेज से आकाश को व्याप्त करता है।[1] एक अन्य मन्त्र में कहा गया है कि सविता देवता समस्त भुवन को आलोकयुक्त करके उन्मुख किरणों का आश्रय लेता है। सबको विशेष रूप से देखने वाला सूर्य अपनी किरणों से द्यावा-पृथ्वी और अन्तरिक्ष को परिपूर्ण करता है।[2] वैदिक मन्त्रों में कहा गया है कि प्रातःकाल सूर्य मानव जाति के लिए उद्बोधक बनकर उदित होता है। उसके द्वारा प्रेरित मनुष्य अपने लक्ष्यों की ओर निकल पड़ते हैं।[3] सर्वद्रष्टा सूर्य अशेष जगती का सर्वेक्षक है। वह मनुष्य के समस्त शुभाशुभ कर्मों का द्रष्टा है। सूर्य नित्य प्रातःकाल उदित होकर अन्धकार का नाश करता है। जगत् के उद्बोधक तथा सर्वेक्षक के रूप में सविता को भी अनेक मन्त्रों में स्तुत किया गया है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि सविता अपने सुवर्णमय रथ पर अन्धकार से युक्त अन्तरिक्ष में भ्रमण करता हुआ देवताओं एवं मनुष्यों को चेतना से युक्त करता है।[4]

दशम मण्डल के 158वें सूक्त के कुछ मन्त्रों में सविता को सूर्य मानकर उससे यज्ञ में आने, रक्षा करने तथा नेत्र प्रदान करने की प्रार्थना की गयी है। ऋग्वेद में दो-तीन स्थलों पर सूर्य को भी मनुष्यों का प्रसविता कहा गया है- 'नूनं जनाः सूर्येण प्रसविता'। जबकि प्रसव कर्म सविता के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यास्क ने सविता को परिभाषित करते हुए कहा है कि 'सविता सर्वस्य प्रसविता'।[5] सविता शब्द 'सू' धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है 'षूङ् प्राणिप्रसवे' अर्थात् जो प्राणियों का प्रसवकर्त्ता है, वह सविता है। यजुर्वेद में भी सविता और सूर्य का स्पष्ट तादात्म्य उल्लिखित है।[6] ब्राह्मण ग्रन्थों में तो दोनों की एकता पूर्णतः प्रतिष्ठित हो गयी थी। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि आकाश में तपने वाला तथा विचरण करने वाला सविता है।[7] पुनः वहीं कहा गया है कि यह सूर्य है, जो तपता है।[8] शतपथ में ही सूर्य को अग्नि का आकाशस्थ रूप माना गया है[9] और सविता को भी अग्नि कहा गया है।[10] ऋग्वेदीय ऐतरेय ब्राह्मण में तो सविता की पुत्री सूर्या से सोम के विवाह का वर्णन है।[11]

पौराणिक युग आते-आते सविता, विवस्वान्, पूषा, मित्र आदि देवों का व्यक्तित्व पूर्णतः सूर्य में समाहित हो गया। विष्णु पुराण में सूर्य के लिए ही सविता, विवस्वान् आदि विशेषण प्रयुक्त हैं। उन्हें

जगत् को प्रेरित करने वाला कहा गया है।[12] ब्रह्म पुराण में सविता शब्द पूर्णतः सूर्य के लिए आया है- **'तत्पुत्रवचनं श्रुत्वा सविताऽचिन्तयत् तदा'**।[13] श्रीमद्भागवत में कहा गया है कि राजा भरत आदित्य की निम्नलिखित श्लोक से स्तुति करते थे- **'परो रजः सवितुर्जातवेदो देवस्य भर्गो मनसेदं जजान'**।[14] वाल्मीकि रामायण के युद्ध काण्ड में 'आदित्य हृदय' स्तोत्र के द्वारा भगवान् सूर्य की स्तुति की गयी है। जहाँ सविता, पूषा आदि देवों को सूर्य का ही रूप माना गया है।

आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः।।

निरुक्तकार यास्क ने एक स्थल पर स्पष्ट रूप से सविता और सूर्य को एक माना है- **'आदित्योऽपि सवितोच्यते'**।[15] बृहद्देवता में शौनक ने सूर्य, सविता तथा भग के मध्य अभेद का वर्णन करते हुए लिखा है कि सूर्य अकेले ही दिन के तारों को अग्रसर करता है। इस कर्म के कारण उसे 'सविता' कहते हैं। जब वह अपनी रश्मियों से इन लोकों को भासमान करते हुए उदित हुआ, तो स्वयं वसिष्ठ ने उसे 'भग' कहा।[16] अमरकोश ने भी सविता को सूर्य का ही पर्यायवाची माना है- **'भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः'**।[17]

इस प्रकार वैदिक एवं वैदिकोत्तर साहित्य में सविता और सूर्य की एकता के पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं परन्तु ऋग्वेद के अन्तर्गत सविता और सूर्य दोनों पृथक्-पृथक् देवता के रूप में स्तुत हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। वास्तव में ऋग्वेद के अन्तर्गत सविता और सूर्य का सम्बन्ध आत्मा और शरीर का सम्बन्ध माना जा सकता है। स्थूल शरीर की भाँति ही सूर्य दृष्टिगत होता है, परन्तु सविता आत्मा के समान अतिसूक्ष्म और महान् तत्त्व है। यह सविता आत्मा की भाँति शरीर रूपी सूर्य के भीतर रहकर भी सूर्य से भिन्न है। वैदिक ऋषि इस तथ्य से भलीप्रकार परिचित थे।

सविता और सूर्य के पार्थक्य को स्पष्ट करते हुए ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के एक मन्त्र में कहा गया है कि सविता मनुष्यों के पाप-पुण्यों को सूर्य से कहता है- **'देवो नो अत्र सविता दमूना अनागसो वोचति सूर्याय'**।[18] ऋग्वेद के दशम मण्डल में एक स्थल पर कहा गया है कि सविता सूर्य-रश्मियों से संयोग कर उन्हें प्रकाशित करता है।[19] सूर्य की उत्पत्ति के विषय में कहा गया है कि सूर्य की उत्पत्ति विराट् पुरुष के

नेत्र से हुई है- **'चक्षोः सूर्यो अजायत्'**[20] जबकि सविता की उत्पत्ति के विषय में कोई स्पष्ट संकेत ऋग्वेद में प्राप्त नहीं होता। यद्यपि अथर्ववेद में सविता की उत्पत्ति हिरण्यमय जल से बतायी गयी है।[21] सायण ने ऋग्वेद के एक मन्त्र की व्याख्या में स्पष्ट लिखा है कि सूर्य को उदय के पूर्व सविता कहते हैं और उदय से अस्त तक वह सूर्य होता है- **उदयात् पूर्वभावी सविता। उदयास्तमयवर्ती सूर्यः।**[22]

सविता के काल के सम्बन्ध में निरुक्तकार यास्क ने कहा है कि सविता का काल अन्धकार की निवृत्ति के बाद आता है। जब आकाश में प्रकाश हो जाता है और प्रकाश की किरणें नभोमण्डल में विकीर्ण होने लगती हैं तथा पृथिवी पर उस समय अन्धकार रहता है, वही समय सविता देवता का माना जाता है- **'तस्य कालो यदाद्यौरपहततमस्काकीर्ण रश्मिर्भवति'।**[23] वस्तु स्थिति यह है कि पहले द्युलोक का अन्धकार नष्ट हो जाता है और वहाँ किरणें फैल जाती हैं। उस समय पृथिवी पर अन्धकार रहता है और किरणें भी दिखाई नहीं पड़ती हैं। द्युलोक की प्रारम्भिक स्थिति को आधार मानकर सविता के स्वरूप का चित्रण किया गया है। जब पृथिवी पर अन्धकार नष्ट हो जाता है और किरणें पृथिवी पर चारों ओर फैल जाती हैं, तब वही सविता सूर्य कहा जाता है। यही सूक्ष्म अन्तर यास्क ने निरुक्त में प्रकाशित किया है।

द्युलोक की स्थिति से सविता को सम्बद्ध किया गया है, जबकि पृथिवी की स्थिति से सूर्य को। सविता प्रेरक होता है, यह बात अनेक स्थलों पर प्रकाशित की गयी है। सविता द्युलोक से सम्बद्ध है तथा सूर्य की अपेक्षा पर है। उसी के दिव्य स्वरूप के साक्षात्कार के लिए ऋषियों की साधना प्रवृत्त होती है। सुप्रसिद्ध गायत्री मन्त्र में उसी सविता के वरेण्य तेज की कामना की गयी है। सूर्य में वह तेज नहीं है, न ही उस प्रकार का प्रेरकत्व है।

सविता के वैशिष्ट्य की विभावना इस प्रकार से की जा सकती है कि उसके लिए 'सूर्यरश्मि' विशेषण का प्रयोग किया गया है। ऋग्वेद में यह विशेषण एक ही बार प्रयुक्त हुआ है- **'सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सविता ज्योतिरुदयाम् अजस्रम्'।**[24] यहाँ 'सूर्यरश्मि' से प्रकाशित होता है कि सविता की रश्मि सूर्य है अर्थात् यह जो सूर्य दिखायी पड़ता है, वह सविता की रश्मि के रूप में ही है। यहाँ ऋषियों ने तेजस् तत्त्व की विभावना की। उस तेजस् के दो रूप सामने आते हैं- एक सविता के रूप में, दूसरा सूर्य के रूप में। यहाँ सविता को प्रधान तथा सूर्य को गौण कहा जा सकता है।

सविता और सूर्य के अतिसूक्ष्म भेद को स्पष्ट करते हुए मन्त्रों के दार्शनिक व्याख्याता श्री अरविन्द ने कहा है कि वैसे तो सूर्य और सविता एक ही हैं। भेद केवल इतना ही है कि सूर्य ज्योति और द्रष्टा है तो सविता स्रष्टा है। सूर्य शब्द का अर्थ है ज्ञान प्रदीप्त या ज्योतिर्मय, जैसे कि ज्ञान प्राप्त मनीषी को भी सूर्य कहा जा सकता है। परन्तु साथ ही इस शब्द की धातु का अभिप्राय है 'सर्जन करना' या अधिक शाब्दिक अर्थ करना हो तो ढीला छोड़ देना, विनिर्मुक्त करना, वेग प्रदान करना है, क्योंकि भारतीय विचार में सृष्टि रचना का अर्थ है- पीछे की ओर रोककर रखी हुई वस्तु को ढीला छोड़ कर सामने ले आना, अनन्त सत्ता में जो कुछ छिपा है, उसकी अभिव्यक्ति कराना। ज्योतिर्मय दृष्टि (सूर्य) और ज्योतिर्मय सृष्टि (सविता) से सूर्य के दो कार्य हैं। वह स्रष्टा सूर्य (सविता) है और सत्य प्रकाशक चक्षु सर्वद्रष्टा सूर्य है।[25]

सविता का समय प्रातः तथा सायंकाल है और यही समय गायत्री मन्त्र के जप का भी माना गया है। इस प्रकार सूक्ष्मता से विचार करने पर कहा जा सकता है कि वैदिक वाङ्मय (विशेष रूप से ऋग्वेद) में सविता और सूर्य में परस्पर अत्यन्त साम्यता होते हुए भी भिन्नता है। वैदिक ऋषियों की आध्यात्मिक दृष्टि में सविता सूर्य की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है।

सन्दर्भ

1. ऋग्वेद 1/35/6
2. वही 4/14/2
3. वही 7/63/1,2,3
4. वही 1/35/2
5. निरुक्त 10/20
6. यजुर्वेद 17/58
7. शतपथ ब्राह्मण 3/2/3/18
8. वही 2/6/3/8
9. वही 6/3/1/6
10. वही 6/2/3/12
11. ऐतरेय ब्राह्मण 4/2
12. विष्णु पुराण 3/11/29
13. ब्रह्म पुराण 86/22
14. श्रीमद्भागवत पुराण 5/7/14

15. निरुक्त 10/32
16. बृहद्देवता 2/62
17. अमरकोश 1/3/38
18. ऋग्वेद 1/123/3
19. वही 10/136/1
20. वही 10/90/3
21. अथर्ववेद 1/63/1
22. ऋग्वेद 5/8/4 पर सायण
23. निरुक्त 12/12
24. ऋग्वेद 10/136/1
25. भगवद्दत्त वेदालंकार- सविता देवता, पृ. 107

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. ऋग्वेद- (अनु. रामगोविन्द त्रिवेदी) चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी

२. शुक्ल यजुर्वेद संहिता - (उवट तथा महीधर भाष्य) मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली 1971 ई.

३. निरुक्त- (व्याख्याकार- छज्जूराम शास्त्री) मेहरचन्द्र लक्ष्मनदास पब्लिकेशन्स, 1 अन्सारी रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली, 1985 ई.

४. शतपथ ब्राह्मण - गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली, 1988 ई.

५. ऐतरेय ब्राह्मण- तारा प्रिंटिंग वर्क्स, कमच्छा, वाराणसी, 1983 ई.

६. विष्णु पुराण -गीता प्रेस, गोरखपुर, सं. 2026

७. ब्रह्म पुराण - हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज

८. भागवतपुराण- गीता प्रेस, गोरखपुर, सं. 2018

९. बृहद्देवता- आचार्य शौनक, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी, वि.सं. 2020

१०.अमरकोष- (रामाश्रयी टीका सहित) चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, 1970 ई.

११.अथर्ववेद- (सायण भाष्य युक्त) चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी

१२.सविता देवता- भगवद्दत्त वेदालंकार, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी